असहयोग आन्दोलन (Non-Cooperation Movements)

भारत के स्वाधीनता संग्राम में 'असहयोग आन्दोलन' का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत ने तन-मन और धन से प्रथम विश्वयुद्ध में ब्रिटेन की सहायता की, किन्तु विश्व युद्ध की समाप्ति पर भारत में न तो लोकतंत्र शुरू हुआ और न राष्ट्रीय आत्म निर्णय का अधिकार ही भारतीयों को मिला। इसके विपरित युद्ध से भारतीय राष्ट्रवाद को अपूर्व प्रोत्साहन प्राप्त हुआ और आन्दोलन के रूप में असहयोग आन्दोलन प्रारंभ हुआ।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद भारतीय राजनीति में एक नए युग का प्रारंभ हुआ जिसे गाँधी युग कहते हैं। 1917 ई० से 1947 ई० तक भारतीय राजनीति की बागडोर महात्मा गाँधी के हाथ में रही, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का उन्होंने पथप्रदर्शन किया। राष्ट्रीय आन्दोलन को उन्होंने नए हथियारों से लैस किया और इसे नवीन दार्शनिक आधार प्रदान किया।

गाँधी युग का इतिहास ही भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की सच्ची कहानी है। प्रथम विश्वयुद्ध तक देश का नेतृत्व बंद कमरों में कुर्सियों पर बैठे बैठे राजनीतिक समस्याओं के सांविधानिक निराकरण ढूँढने वाले राजनीतिज्ञों के हाथ में था। राष्ट्रीय आन्दोलन केवल मध्यम शिक्षित वर्ग तक ही सीमित था, जन आन्दोलन का रूप नहीं ले सका था। गाँधी युग के आरंभ होते ही भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का रूप बदल गया। जनता का आंदोलन बन गया। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में कांग्रेस जनता का संगठन बन गई। सत्य और अहिंसा के मार्ग ने जनता में नया उत्साह और स्फूर्ति का संचालन कर दिया। गाँधीयुग में भारतीय आंदोलन की प्रकृति और विचारधारा पूर्णतः नवीन, शांतिपूर्ण और क्रांतिकारी हो गई।

महात्मा गाँधी का राजनीति में प्रवेश:- महात्मा गाँधी ने ब्रिटिश सरकार के एक सहयोगी के रूप में भारतीय राजनीति में प्रवेश किया। प्रथम विश्वयुद्ध के समय उन्होंने इस बात पर बल दिया कि आपत्तिकाल में शत्रु को भी सहायता दी जानी चाहिए। उन्होंने भारतीयों को सेना में भर्ती होने के लिए कहा तथा शासन के लिए धन इकट्ठा किया। किंतु, ब्रिटिश सरकार ने इसका उत्तर अत्यन्त निराशाजनक ढंग से दिया जिससे गाँधीजी ने सरकार को शैतान कहा और सरकार को झुकाने के लिए जनता को 'असहयोग आन्दोलन' के लिए तैयार किया। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार किया जाता था तथा उनके साथ रंगभेद की नीति अपनाई जाती थी। वहाँ के भारतीयों ने महात्मा गाँधी के नेतृत्व में सत्याग्रह किया। बाद में अफ्रीकी सरकार को समझौता करना पड़ा और कानूनों में आवश्यक परिवर्तन लाना पड़ा। महात्मा गाँधी ने एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। दक्षिण अफ्रीका से वे एक नूतन कार्यपद्धति अपने साथ भारत लाए थे जिसे सत्याग्रह कहा जाता है। अब उन्होंने सत्याग्रह द्वारा ही शासन को झुकाना समुचित समझा। 1917 में [illegible] पर निलहे गोरे (जिसकी बड़ी बड़ी जमींदारियाँ थी) अंग्रेजी

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

दुराग्रहपूर्ण साधनों का प्रयोग किया गया, उनके द्वारा भी जनता में असंतोष फैला। अधिकारियों द्वारा गाँव-गाँव जाकर प्रत्येक कुटुम्ब में से दो-दो, तीन-तीन व्यक्तियों को अनिवार्य भर्ती की गई।

(vi) छँटनी की नीति :- युद्ध के समय हजारों व्यक्तियों को सेना में भर्ती किया गया और युद्ध समाप्ति के बाद शासन में छँटनी की नीति अपनाई जिससे हजारों नौजवान बेकार हो गए। युद्ध में लड़ने वाले वीर सैनिक युद्ध के बाद भूखों मरने लगे जिससे जनता में आक्रोश उत्पन्न हो गया।

(vii) रॉलट एक्ट (Rowlatt Act) :- युद्ध काल में 'भारतीय सुरक्षा अधिनियम' पारित किया गया था। युद्ध की समाप्ति के पूर्व ही शासन ने जस्टिस रॉलेट की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की। जिसे ऐसे कानूनों की रूप रेखा तैयार करने को कहा गया जिनसे क्रान्तिकारियों के षड्यन्त्रों का सामना किया जा सके। शासन ने 'रॉलेट समिति' की रिपोर्ट को कानून का रूप देने का प्रयास किया। महात्मा गाँधी ने इसका घोर विरोध किया फिर भी 18 मार्च 1919 को 'रॉलेट बिल' कानून बन गया। हड़ताल पूरे देश में होने लगा लेकिन किसी कारण वश हड़ताल होने की तारीख 6 अप्रैल निश्चित की गई। पूरे देश में 6 अप्रैल को शांतिपूर्ण हड़ताल हुई। गाँधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया जिससे अहमदाबाद में उपद्रव हुए। रॉलेट एक्ट को 'काला कानून' कहा गया और सरकार के विरुद्ध एक असंतोष का वातावरण तैयार हो गया।

(viii) जालियाँवाला बाग हत्याकाण्ड :- रॉलेट एक्ट का विरोध करने के लिए पूरे देश में हड़तालें, सभाएँ और जुलूसों का आयोजन किया गया। सन 1919 में माइकेल ओ डायर (Michael O' Dyer) पंजाब के गवर्नर थे। वे भारतीयों की राजनीतिक आकांक्षाओं का मजाक उड़ाते थे। 10 अप्रैल को अमृतसर के कमिश्नर ने डॉ० सत्यपाल तथा डॉ० किचलू नामक पंजाब के दो नेताओं को अमृतसर से निष्कासित कर नजरबन्द कर दिया। शासन की इस आज्ञा से नगर में उत्तेजना फैल गई और जुलूस निकालकर जनता ने उनकी रिहाई की माँग की। जुलूस तथा हड़ताल के कारण पुलिस तथा भीड़ में कहा सुनी हो गई और पुलिस ने गोली चला दी जिससे शेरवुड नामक ईसाई प्रचारिका की मृत्यु हो गई। बाद में अमृतसर का भार जनरल डायर को सुपुर्द कर दिया गया। सेना ने सभाओं और जुलूसों पर प्रतिबन्ध लगा दिया किन्तु इसकी सूचना जनता तक नहीं पहुँच पाई। 13 अप्रैल 1919 को एक सार्वजनिक सभा करने की घोषणा की गई जिसे जनरल डायर ने रोकने की कोशिश नहीं की। जालियाँवाला बाग में लगभग 20 हजार स्त्री पुरुष इकट्ठे हुए और जब भाषण शुरू हुआ तो जनरल डायर सेना की गाड़ी लेकर पहुँचा और भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। भीड़ में भगदड़ मच गई और भीड़ तितर-बितर होने लगी। जब बारूद और कारतूस खत्म हुए तब ही गोलियों की वर्षा रुकी। लगभग 300 व्यक्ति मारे गए और 1200 व्यक्ति इस घटना से घायल हुए। पंजाब के महत्वपूर्ण नगरों में सैनिक शासन लागू कर दिया गया और लोगों पर अत्याचार किए गए। उन्हें पेट के बल चलाया गया, नलों में पानी बंद कर दिया गया। क्षुब्ध होकर टैगोर ने 'सर' का खिताब छोड़ दिया, शंकरन नायर ने कार्य कारिणी [illegible] पद त्याग दिया। घोरतम व्यवहार के परिणाम स्वरूप असहयोग आन्दोलन हेतु वातावरण तैयार

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

सरकार के भरोसे अत्याचार करते थे, के विरुद्ध सत्याग्रह किया जिससे सरकार को झुकना पड़ा और किसानों के हालत में सुधार हुआ। अब गाँधीजी को पूरा विश्वास हो गया कि जनता के कष्ट निवारण हेतु सत्याग्रह का सफल प्रयोग किया जा सकता है। दूसरा सत्याग्रह आन्दोलन 1918 ई० में शुरू हुआ। अनावृष्टि के कारण फसल बर्बाद हो गई थी। अतः उन्होंने कर नहीं दो आन्दोलन शुरू किया। सत्याग्रह का प्रयोग करके सफलता पायी। उसी वर्ष अहमदाबाद में मजदूरों के प्रार्थना पर मिल मालिकों के विरुद्ध वेतन वृद्धि के मुद्दे पर अनशन के चौथे दिन मजदूरों को हक दिलाने में सफलता पाई। 1920 ई० में देशव्यापी सत्याग्रह शुरू हो गया और 1947 तक गाँधी जी ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध लड़ते रहे।

असहयोग आन्दोलन के कारण :- महात्मा गाँधी के नेतृत्व में देशव्यापी आंदोलन शुरू हुआ। युद्ध के कारण कुछ ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई तथा ऐसी घटनाएँ घटी जिनके कारण भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को असहयोग आंदोलन चलाना पड़ा। इस प्रकार असहयोग आन्दोलन के कारण निम्नलिखित है।

(i) **विश्व युद्ध में ब्रिटेन की विजय** :- प्रथम विश्व युद्ध के समय लॉर्ड कर्जन ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने भारतीयों से कहा कि आपका सहयोग जरूरी है। युद्ध में ब्रिटेन की विजय हुई लेकिन सहयोग की भावना को भूलकर कठोर नीति अपनाई।

(ii) **भारतीयों में असंतोष** :- युद्ध समाप्ति के बाद भारत में असंतोष और निराशा बढ़ रही थी। भारत की आर्थिक दशा बुरी तरह बिगड़ गई थी। वस्तुओं की कीमतों में काफी वृद्धि हो गई थी तथा जीवन उपयोगी वस्तुओं का मिलना दुर्लभ हो गया था।

(iii) **भारत में अकाल तथा महामारी** :- सन 1917 में एक तरफ पर्याप्त वर्षा न होने के कारण अकाल तथा दूसरी ओर प्लेग एवं इन्फ्लूएंजा के प्रकोप ने भारतीयों की कमर तोड़ दी क्योंकि भारत की सारी शक्ति ब्रिटेन को युद्ध में सहायता देने में लगी हुई थी, अतः अनेक व्यक्ति अकाल एवं महामारी की चपेट में आ गए। सरकार से भी कोई सहायता नहीं मिली, जिसके कारण जनता में असंतोष बढ़ता गया।

(iv) **सरकार का दमन चक्र** :- एक ओर सरकार जनता को राजनीतिक सुधारों का आश्वासन दे रही थी और दूसरी ओर राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचलने के लिए कड़ा से कड़ा कदम उठा रही थी। प्रेस एक्ट, क्रिमिनल लॉ इत्यादि दमनकारी कानूनों का निर्माण राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचलने के उद्देश्य से ही किया गया। क्रांतिकारियों को फाँसी, कालापानी तथा कठोर कारावास का तेजी से लागू होना शुरू हो गया।

(v) **सेना में बाध्यतापूर्वक भर्ती** :- शासन द्वारा सेना में भर्ती के लिए जिन

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

हण्टर समिति प्रतिवेदन :- जॉलियाँ वाला बाग दुर्घटना की जाँच के लिए शासन ने हण्टर समिति की नियुक्ति की। शासन ने समिति की बहुमत रिपोर्ट में सम्पूर्ण घटना पर लीपा पोती कर दी। जनरल डायर को कोई सजा नहीं दी गई तथा लार्ड सभा में उसे 'साम्राज्य का शेर' तथा 'साम्राज्य का रक्षक' कहकर संबोधित किया गया। ऐसी स्थिति में अंग्रेजों की न्याय भावना पर से विश्वास उठ गया और राष्ट्र की सुषुप्त चेतना जाग्रत हो गई।

खिलाफत का प्रश्न :- प्रथम विश्वयुद्ध में तुर्की जर्मनी के साथ ब्रिटेन के विरुद्ध लड़ा था। युद्ध के समय भारतीय मुसलमानों द्वारा सरकार की सहायता इस शर्त पर की गई कि ब्रिटेन तुर्की के साथ उदार संधि करेगा। भारत के मुसलमान तुर्की के सुल्तान को 'खलीफा' मानते थे और सम्मान की दृष्टि से देखते थे। सरकार के आश्वासन देने के बाद भी तुर्की के साथ सीवर्स की कठोर सन्धि की। इससे भारतीय मुसलमानों को तीव्र आघात पहुँचा और एक शक्तिशाली 'खिलाफत आन्दोलन' उठ खड़ा हुआ। गाँधीजी ने 'खिलाफत आन्दोलन का समर्थन किया और इसे हिन्दू-मुस्लिम एकता का सुन्दर अवसर समझा। उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता के आधार पर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध 'असहयोग आन्दोलन' छेड़ने का निश्चय किया।

असहयोग आन्दोलन की दुर्बलताएँ :-

(I) राजनीति में धर्म का प्रवेश था जिसके ऐतिहासिक प्रभाव बड़े भयंकर हुए।

(II) आन्दोलन को आकस्मिक रूप से बन्द करना अनुचित था (चौरी-चौरा काण्ड घटित हो जाने के कारण महात्मा गाँधी ने अचानक 'असहयोग आन्दोलन' को स्थगित कर दिया।)

(III) जनता को प्रशिक्षित किए बिना आन्दोलन छेड़ना गाँधीजी की भूल थी।

(IV) आन्दोलन सरकार पर विशिष्ट प्रभाव न जमा सका तथा सरकारी दमन के आगे आन्दोलनकारियों को झुकना पड़ा।

असहयोग आन्दोलन का महत्व :- असहयोग आन्दोलन द्वारा राष्ट्रीय चेतना जाग्रत हुई। यह आन्दोलन कांग्रेस की नीति व साधनों में परिवर्तन लाने की दृष्टि से ऐतिहासिक था। इससे पूर्व कांग्रेस उदार एवं संवैधानिक साधनों में विश्वास करती थी, किन्तु अब जन आन्दोलन के साधनों को कांग्रेस ने अपना लिया। इस आन्दोलन के द्वारा जनता में स्वदेशी वस्तुओं के प्रति प्रेम की भावना उत्पन्न हुई। आन्दोलन ने सरकार की जड़ों को हिला दिया और सरकार की कठोरता में भी पर्याप्त शिथिलता आई। इस आन्दोलन ने भारत के स्वाधीनता आन्दोलन को जन आन्दोलन में परिवर्तित कर दिया और आन्दोलन की अवधि में कांग्रेस ने रचनात्मक कार्यक्रमों को अपनाया, जिससे देश को भारी लाभ हुआ। महात्मा गाँधी ने परिस्थितियों को पहचाना और यह अनुभव किया कि यह समय सरकार से असहयोग करने के लिए पर्याप्त उपयुक्त है, अतः गाँधीजी असहयोगी बन गये और खुलकर अंग्रेजों के सारे कामों में असहयोग करने लगे। आन्दोलन से भारतीयों की आँखें खोल दी। भय एवं आतंक दिल से निकल गया। बच्चे-बच्चे के मुँह पर स्वराज्य शब्द आ गया।

(समाप्त)

डॉ० राजू मोची
विभागाध्यक्ष - राजनीति विज्ञान
डी.के. कालेज, डुमराँव
दिनांक 12/08/20